Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 5, May-June, 2024
Available online : https://sijarah.com/

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महात्मा गाँधी एवं स्वामी विवेकानन्द के दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों की प्रासांगिकता

रवीन्द्र प्रताप सिंह* एवं डॉ0 अंजू कंसल**

*पी–एच.डी. शोध छात्र (शिक्षाशास्त्र), निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)

**असिस्टेंट प्रोफेसर–शिक्षाशास्त्र विभाग, निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)

सारांश

जिस समय विश्व के अन्य किसी भी भाग में चित्त मानव चिन्तन का कोई रूप मुखरित नहीं हुआ था अर्थात् ईसा के कई शताब्दियों पूर्व भी भारतीय चिन्तकों के सूत्र–सिद्धान्तों ने भारत को विश्व–गुरू के सर्वोच्च शिखर पर प्रतिष्ठित कर दिया था। भारतीय चिन्तन की यह परम्परा वास्तव में वैदिक युग से लेकर आज तक अक्षत रूप से गतिशील है। हमारे इस चिन्तन का आधार हमारा गौरवशाली अतीत ही है, किन्तु आज उस पर वर्तमान की छाप भी प्रबल रूप से अपना प्रभाव बनाये हुए है। यहॉ यह भी निःसंकोच कहा जा सकता है कि यह हमारा दुर्भाग्य है कि आज हमारी ऑखों पर लगे चश्मे के 'लैंसों' को पश्चिमी रंग से इतना गहरा रंग दिया गया है कि भारतीय श्रेष्ठता एवं महानता कई बार अविश्वासी सी प्रतीत होने लगती है। हम अपने गौरवमयी अतीत को भूलने के साथ–साथ यह भी भूल जाते है कि 19वीं शताब्दी में ही स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, रामकृष्ण परमहंस सरीखे चिन्तकों और दार्शनिकों ने विश्व के सामने भारत की महानता को प्रकट किया है। भारत में यद्यपि बहुत समय से इस बात का अनुभव किया जाता रहा है कि भारतीय नागरिकों में व्याप्त निरक्षरता को समाप्त किया जाना चाहिए, परन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् तो स्वतंत्र नागरिकों को स्वतंत्रता की सुरक्षा और प्रगति के लिए तैयार करने के उद्देश्य से जनमत को सफल बनाने के प्रयास आवश्यक प्रतीत हुए, जनमत की सफलता साक्षरता पर आधारित होती है। अतः साक्षरता के प्रसार के लिए प्राथमिक शिक्षा की अनिवार्यता पर बल देना पड़ा जो हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का सर्वोत्तम उपहार है। हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के इसी उपहार को 'नई तालीम', 'बुनियादी शिक्षा'' और 'वर्धा शिक्षा आयोग' के नामों से भी पुकारा जाता है। हमारे महा–मनीषी स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में, ''भारत में विदेशियों को आने दो, शस्त्र–बल से जीतने दो, किन्तु हम भारतीय अपनी आध्यात्मिकता से समस्त विश्व को जीत लेंगे। प्रेम घृणा पर विजय पायेगा। हमारी आध्यात्मिकता पश्चिम को जीत कर ही रहेंगी।''

Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 5, May-June, 2024
Available online : https://sijarah.com/

की–वर्ड : 'नई तालीम', 'बुनियादी शिक्षा''वर्धा शिक्षा आयोग', नव्य–वेदान्त दर्शन, विश्वशान्ति, अष्टांगिक मार्ग

प्रस्तावना

भारतीय चिन्तन धारा किसी एक ही पहलू पर ही अपनी इतिश्री नहीं समझती। अपितु यह जहॉ आध्यात्मिकता मानव चिन्तन के शिखरों पर जाकर ठहरती है वहीं राजनीतिक एंव सामाजिक चिन्तन भी 'मील के पत्थर' के समान अविचलित रूप से महत्वपूर्ण स्थान रखती है। महाभारत एंव रामायण में राजनीति के जिन गहन सिद्धान्तों के दर्शन होते है वे हमारे लिए गर्व के बिन्दु हैं। भारत के प्राचीन साहित्य एवं वाङमय में चिन्तन के चहुमुॅखी ऐसे–ऐसे पक्ष में मिलते है जो विदेशों के लिए आज भी कल्पना मात्र है। इतना होने के बाद भी विदेशी इस क्षेत्र में हमारा उपहास करते रहे, यह तीखा प्रश्न हमारे सम्मुख आ खड़ा होता है। अरनेस्ट वार्कर सरीखे विदेशी आलोचको ने भारतीय राजनीतिक चिन्तन की तुलना रेगिस्तान से कर डाली। यदि ऐसी कड़वी आलोचना के कारणों पर थोड़ा सा दृष्टिपात करें तो–यह हमारा दुर्भाग्य है कि प्राचीन काल से चले आ रहे हमारे गम्भीर राजनीतिक दर्शन का प्रतिनिधित्व करने वाला कोई एक मुद्रित ऐसा नहीं है जैसा पाश्चात्य राजनीतिक साहित्य सरीखा ग्रन्थ एक सूत्रीयता लिये हों। लम्बी दासता भी इसका एक बहुत अहम् कारण है जिसमें विदेशियों ने मात्र, न हमें धन से अपितु मन से भी खोखला करने के षड्यन्त्र रचे। ऐसा करने से ही उनकी यहॉ मजबूती होती थी। तीसरा कारण यह है कि अधिकांश विदेशियों को भारत की गौरवशाली परम्परा का समुचित ज्ञान नहीं है और भारतीयों ने विदेशियों को अपना ज्ञान उपलब्ध कराने की कोई चेष्टा नहीं की। जिस कारण विदेशियों को भारत के बारे में अनेक भ्रान्तियॉ उत्पन्न हुई तथा एक और चतुर्थ सबसे बड़ा कारण यह रहा कि विदेशियों से भी अधिक भारतीय स्वयं भी अपनी महान और गौरवपूर्ण परम्परा से अनभिज्ञ है। भारत के अतीत का अध्ययन करने में उन्हें कोई रूचि नहीं है। भारत के आध्यात्मिक, सामाजिक और राजनीतिक चिन्तन की श्रेष्ठता को यदि कभी वे मन में महसूस करते हैं तो भी उसे प्रकट करने मे हिचकिचाते हैं। वास्तव में पश्चिम की आधुनिक भौतिक सभ्यता में वे इतने डूब चुके थे कि पश्चिम की प्रशंसा करना ही वे आधुनिकता की निशानी समझते है। भारतीय चिन्तन को समझने–समझाने को वे पिछडापन का प्रतीक मानते हैं एवं ऐसा प्रयत्न करने वालों को 'दकियानूसी' कहने में अपनी शान समझते है।

अतः निष्कर्ष रूप में यह कह सकते है कि भारतीय भूमि राजनीतिक चिन्तन के लिये पर्याप्त उर्वरा रही है लेकिन उससे प्राप्त सिद्धान्त एवं सूत्र रूपी फसल को एक सूत्रता में पिरोया जाता। यहॉ यह भी उल्लेखनीय है कि, ''वस्तुतः निवर्तमान प्रवृत्तियॉ

Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 5, May-June, 2024
Available online : https://sijarah.com/

को नई दिशा प्रदान करने, अथवा निवर्तमान चिन्तन को मौलिक स्वरूप प्रदान करने में भी देश की तत्सम्बन्धी एतिहासिक परम्परायें या तो पुनर्जागृत होती हैं या उनमें कुछ सुधार किये जाते है, अथवा एकाएक किसी सामाजिक, राजनीतिक या आर्थिक क्रान्ति के हो जाने से नई व्यवस्था के सृजन के बारे में विद्वान लोग स्वतन्त्र रूप से चिन्तन करके कुछ मौलिक विचार प्रस्तुत करते है।

उन्नीसवीं शताब्दी में भारत मे ऐसे अनेक महापुरूषों का अभ्युदय हुआ जिन्हें पाश्चात्य देशों के इस विकास का अध्ययन करने का अवसर मिला था और भारत के पुनरूत्थान के निमित्त उन्होंने चिन्तन करना आरम्भ कर दिया। यहीं से आधुनिक भारत का सामाजिक तथा राजनीतिक चिन्तन प्रारम्भ हुआ माना जाता है। आधुनिक भारतीय राजनीतिक तथा सामाजिक चिन्तन की कुछ अपनी विशेषताएँ है। भारत का नवजागरण भी भारतीय राजनीतिक एवं सामाजिक चिन्तन का ही फल है। जब ब्रिटिश साम्राज्य भारत में अपने पूर्ण रूप में स्थापित हो गया तो अंग्रेजों की साम्राज्यवादी शोषण नीति के विरूद्ध भारत को बुद्धिजीवी वर्ग में राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न होने लगी। इस वर्ग के महापुरूषों के विचारों ने भारत में एक क्रान्तिकारी नवजागरण आन्दोलन को जन्म दिया। यह भारतीय नवजागरण सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनीतिक प्रायः सभी क्षेत्रों में अपने प्रभाव को प्रसारित करने लगे। राष्ट्रीय चेतना के विकास ने नवजागरण के नेताओं को जो मुख्यता बुद्धिजीवी वर्ग था, इन विविध क्षेत्रों में सुधार के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करने की प्रेरणा दी। इसलिए इस युग में विचारों मे मुख्यतया व्यावहारिक समाधान है। 19वीं सदी के चिन्तकों के विचार स्वतन्त्रता आन्दोलन का संचालन करने की विविध धारणाओं, साधनों, कार्यक्रमों आदि में परिवर्तन आदि की दिशा के व्यावहारिक कदम ही थे।

उन्नीसवीं सदी का काल भारत के वर्तमान नवजागरण का काल है। भारत लम्बे समय तक विदेशियों की राजनीतिक दासता का शिकार होता रहा है। मध्य युग में अफगान तथा मुगल भारत पर अपना सियासी आधिपत्य स्थापित करके यहीं बस गये। किन्तु इसी श्रृंखला में अनेक विदेशी लुटेरों ने भारत को लूटा व बरबाद किया। जो विदेशी एवं विधर्मी यहॉ स्थाई रूप से बस गये उन्होंने हिन्दुत्व एवं हिन्दू संस्कृति की जी तोड़ उपेक्षा की और उसके मुकाबले में अपनी संस्कृति का प्रचार–प्रसार किया। इस प्रकार सम्पूर्ण मुस्लिम शासन काल में हिन्दू समाज की स्थिति अत्यन्त पतितावस्था को प्राप्त कर गई थी। उसी समय निराश हिन्दू समाज को थोड़ा बहुत भक्ति मार्गी सम्प्रदायों, साहित्यकारों से प्राप्त हुआ। इन महान आत्माओं के कार्यकलापों ने भारतीय नवजागरण के बीजों का वपन किया, जो उचित समय पाकर शनैःशनैः अंकुरित होने लगे थे। मुगलों के लम्बे एवं विधर्मी शासन के उपरान्त भारत

Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 5, May-June, 2024
Available online : https://sijarah.com/

को क्रूर एवं नितान्त लोभी–स्वार्थी ब्रिटिश साम्राज्यवाद का जुआ लम्बे समय तक अपने कंधो पर रखकर अपनी यात्रा जारी रखनी पड़ी तथा ब्रिटिश साम्राज्य की शोषण नीति के प्रतिक्रिया स्वरूप ही भारत की बुद्धिजीवीं वर्ग में राष्ट्रीय चेतना का प्रस्फुटन होने लगा। इस वर्ग के महापुरूषों के विचारों एवं क्रियाकलापों ने भारत मे एक क्रान्तिकारी पुनर्जागरण आन्दोलन को जन्म दिया। भारत में यह नवजागरण चहुँमुखी होकर अर्थात् धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक सभी क्षेत्रों में जागृत होने लगा। 19वीं शताब्दी में जिन भारतीय महापुरूषों ने अपने विचार रखे वे इस बात से आतंकित थे कि भारतीय जीवन में जो अनेक दोष उत्पन्न हो चुके है, उनमें सुधार हुए बिना समाज की उत्थान नहीं हो सकता। इन महापुरूषों ने अपने विचारों को जनता के सामने लाने के साथ–साथ उन पर रचनात्मक कार्यान्वित उत्पन्न हुई और इसके निवारण के हेतु जनमत का भी निर्माण सम्भव हुआ।

गांधी जी के अनुसार ''उनकी नई तालीम धन पर निर्भर करती है। इसे चलाने का खर्च स्वयं शिक्षा प्रक्रिया से ही निकल आना चाहिए। इसकी जो भी आलोचना हो मैं जानता हूँ कि शिक्षा वही है जो आत्मनिर्भर हो।'' अतः इस प्रकार से ही मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा का विकास करना चाहिए इसलिए गांधी जी ने $3R^S$ (Reading, Writing, Arithmetic) की शिक्षा को $3H^S$ (Hand, Head and Heart) की शिक्षा में बदल दिया।

दर्शन एक प्रकार से विचारात्मक पहलू है और शिक्षा उसका क्रियात्मक पक्ष है। इस प्रकार दर्शन द्वारा जिन सिद्धान्तों का प्रतिपादन होता है वह शिक्षा की व्यवहारिक कसौटी पर कस कर देखा जाता है कि वह कहाँ तक उपयोगी है अथवा नहीं। सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् जैसे शाश्वत् मूल्यों की प्राप्ति शिक्षा के द्वारा ही सम्भव है। समाज की नवरचना तभी सम्भव हो सकती है जबकि शिक्षा भी उसी के अनुरूप बनायी जाये। सभी शिक्षाशास्त्रियों के जीवन दर्शन का प्रभाव उसके शिक्षा जीवन पर स्पष्टतया परिलक्षित होता है। गाँधी जी के जीवन दर्शन का भी प्रभाव उसके शिक्षा दर्शन के पश्चात् उनको कार्य रूप में परिणित या क्रियान्वित करने के लिए एक शिक्षा पद्धति की आवश्यकता पड़ती है। पूज्य बापू जी ने अपने शिक्षा दर्शन में मानव के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास का अवसर दिया। हस्तकला के द्वारा श्रम के मूल्य को बढ़ाने का मौलिक एवं नवीन उपाय प्रस्तुत किया। कुटीर उद्योगों और ग्रामोद्योगों को आगे बढ़ाने का मौलिक एवं नवीन उपाय प्रस्तुत किया। कुटीर उद्योगों और ग्राम उद्योग को आगे बढ़ाने हेतु शोषणहीन सर्वोदयी दर्शन समाज के समक्ष प्रस्तुत किया। यद्यपि गाँधी जी की शिक्षा में त्याग, एकान्त एवं ताम्प्रस्थ का कोई महत्व नहीं है पर शोषणहीन समाज में साथियों की सेवा करने, प्रेम करने और सद्गुणों के विकास करने का अमूल्य मंत्र

Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 5, May-June, 2024
Available online : https://sijarah.com/

निहित है। इसी दर्शन से आत्मशान्ति, सुख, उद्योग प्राप्ति के साथ विश्वबन्धुत्व की स्थापना इस संसार में सम्भव है। ''सा विद्या या विमुक्तये'' का प्राचीन आदर्श भी उनकी शिक्षा में निहित है। इस प्रकार उन्होंने मानव जीवन का अन्तिम लक्ष्य चरम सत्य अथवा ईश्वर का प्रत्यक्षीकरण ही अपने दर्शन का लक्ष्य रखा। इस शिक्षा दर्शन के ही सफल क्रियान्वयन हेतु पूज्य बापू जी ने बुनियादी शिक्षा का प्रणयन एवं प्रतिपादन किया।

आज का वह युवा वर्ग जो पश्चिमी सभ्यता के वशीभूत नरों के शिकार होते जा रहे, उन्हें गाँधी जी के जीवन से सीख लेनी चाहिए जो इस प्रकार के वातावरण में रहकर भी उसी प्रकार मद्यपान से दूर रहे जिस प्रकार चन्दन में रहकर भी विषधर लिपटे रहने पर भी वे चन्दन को विषैला बनाने में असफल रहते हैं।

विवेकानन्द का मत था कि युक्ति अथवा ब्रह्म ज्ञान मानव जीवन का परम लक्ष्य है किन्तु कोई भी व्यक्ति केवल कुछ छणों तक ही ब्रह्म में लीन रह सकता है। शेष समय में उसे जगत के सभी प्राणियों की सेवा करनी चाहिये क्योंकि मूल रूप से सभी में एक ही आत्मा का वास है। स्वामी जी ने वेदान्त के तीन रूपो द्वैत, विशिष्ट द्वैत और अद्वैत तीनो को एकरूपता के सूत्र में पिरोने का सार्थक प्रयास किया। स्वामी जी अद्वैत के समर्थ थे इनके अनुसार द्वैत, विशिष्ट द्वैत और अद्वैत इनमें कोई अन्तर नहीं है। ये तीनो वेदान्त दर्शन के ही सोपान है। जिनका अन्तिम लक्ष्य अद्वैत की अनुभूति ही है। इतना ही नहीं स्वामी जी तो विश्व के सभी धर्मों और दर्शनों को अन्त में अद्वैत की ओर झुका बताते थे। भारतीय संस्कृति के विकास व इतिहास में 18वीं शताब्दी के महान वेदान्ती स्वामी विवेकानन्द केवल दार्शनिक अथवा धर्माचार्य के रूप में नहीं आते है अपितु इन दोनों से कहीं अधिक एक प्रखर शिक्षाशास्त्री के रूप में प्रस्तुत होते है उन्होंने अपने व्यक्तित्व अपने कृतित्व द्वारा एक विशिष्ट प्रकार के शिक्षा दर्शन को विकसित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

सन 1915 में गांधी जी स्वदेश लौट आए। स्वदेश लौटने पर उन्हे रवीन्द्र नाथ टैगोर द्वारा **'महात्मा'** की उपाधि से विभूषित किया गया। सन् 1917 ई0 में उन्होंने चम्पारन में गोरों के अत्याचार के विरूद्ध 1920 में **'असहयोग आन्दोलन'** प्रारम्भ किया। इस आन्दोलन में सरकारी संस्थाओं और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया गया। सन् 1924 ई0 में उन्होंने 'हिन्दू–मुस्लिम एकता' हेतु आन्दोलन किया। सन् 1927 ई0 में उन्होंने देश की आर्थिक स्थिति सुधारने हेतु **'खादी–आन्दोलन'** का सूत्रपात किया। सन् 1930 ई0 में वे **'नमक कानून'** तोड़ने के फलस्वरूप जेल गए। सन् 1934 ई0 में गांधीजी ने ग्रामोद्धार का कार्यक्रम प्रारम्भ किया। सन् 1935 ई0 में उन्होंने सेवाग्राम में (वर्धा) अपना आश्रम बनाया। वहीं से ग्रामीण उद्योग के विकास का कार्यक्रम प्रारम्भ किया। 1942 ई0 में गांधी जी ने **'भारत छोड़ो आन्दोलन'** का नेतृत्व किया। अन्त में

Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 5, May-June, 2024
Available online : https://sijarah.com/

गांधीजी के अनवरत प्रयासों के फलस्वरूप भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त हुयी परन्तु भारत के दो टुकड़े हो गए। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात अनेक साम्प्रदायिक दंगे हुए। 30 जनवरी 1948 ई0 सन्ध्याकाल के समय **बिडला भवन** में नाथूराम गोडसे नामक एक व्यक्ति ने गांधी जी पर तीन गोलियाँ चलाकर उनकी हत्या कर दी। गाँधी जी राम–राम कहते हुए इस संसार से विदा हो गए, परन्तु उनकी कीर्ति सदैव के लिए अमर हो गयी। वस्तुतः पुष्प मुरझा जाते हैं परन्तु उनकी महक वातावरण में सदैव विद्यमान रहती है। इसी प्रकार बापूजी चिरनिंद्रा में विलीन होने के बावजूद अपने विचारों एवं अमरकृतियों द्वारा इस संसार में सदैव विद्यमान है।

गाँधी जी एवं स्वामी विवेकानन्द जी के दार्शनिक विचार

ज्ञान व कर्मवादी भावना :–ज्ञान व कर्म में धनिष्ठ सम्बन्ध है। वे एक दूसरे के पूरक हैं। गांधीजी भगवद्गीता में विश्वास रखते हैं। उनका मत है कि व्यक्ति अपने कर्मों का पालन करके ही सिद्धि प्राप्त कर सकता है। उन्होंने समस्त कार्यों को निष्काम भाव से करने का सन्देश दिया। जैसा कि गीता में उल्लिखित है–

''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

या कर्मफल हेतु र्भूमा ते संडोऽस्त्वकर्मणी।।''

विचार जीवन नहीं है कार्य ही जीवन है। कर्म की शुद्धि हेतु सफलता के लिए और अन्त में मोक्ष प्राप्ति हेतु विचार आवश्यक है। **ज्ञानात् एवं तु कैवल्यम्** यह बात जितनी सत्य है उतनी ही **ज्ञानात एवं तु कौशल्यम्** भी सत्य है। गीता में ज्ञान की जो व्याख्या दी गयी है उसमें बहुत से तत्व तो कर्म के ही हैं। सच्चा ज्ञान कर्म के बिना मिल नहीं सकता टिक भी नहीं सकता और अपना असर किए जितना प्रवाहमय भी नहीं हो सकता। ज्ञान–कर्म समुच्य यह पक्ष अधूरा है गीता की व्याख्या की परिभाषा को स्वीकार करे तो ज्ञानकर्म की एकता ही अभीष्ट है यही सच्चा तत्व है।

सत्याग्रह :–सत्याग्रह जैसा कि नाम से ही स्पष्ट करना है कि सत्य के लिए आग्रह करना। किन्तु गांधीजी के सत्याग्रह का अर्थ अति विस्तृत है। उनके अनुसार सत्याग्रह का तात्पर्य सत्य के लिए डटे रहना ही नहीं बल्कि विरोधी को बिना कष्ट दिए हुए सत्य का समर्थन करना है। चाहे स्वयं कष्ट उठाना पड़े। इसी शस्त्र का प्रयोग करके गांधीजी ने भारत को स्वतन्त्र कराया। सत्याग्रह का उद्देश्य है विरोध का अन्त करना न कि विरोधी का अन्त करना। गांधीजी ने समय–समय पर सत्याग्रह के अस्त्रागार से नए–नए अस्त्र दिए क्योंकि वह मानते थे कि सत्याग्रह की आत्मा तो वही रहती है केवल अस्त्र बदल जाते है।

Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 5, May-June, 2024
Available online : https://sijarah.com/

प्रेमः– गांधीजी ने कहा कि "Love does not burn others it burns itself suffering joyfully even into death it will do no international injury is thought, word or deed to a single man"

पुनर्जन्मः– गांधीजी पुनर्जन्म में विश्वास करते थे। उनका कथन था'' मैं पुनर्जन्म में उतना ही विश्वास करता हूँ जितना कि अपने वर्तमान शरीर के अस्तित्व में। इसलिए मै मानता हूं कि छोटे से छोटा कार्य भी व्यर्थ नहीं है। अपने इस पुनर्जन्म के विश्वास के फलस्वरूप ही गांधीजी निरन्तर कार्य करते रहने की प्रेरणा देते हैं और कहते है कि ''मनुष्य का कोई कार्य कुछ वर्षों में पूरा नहीं हुआ तो कुछ शताब्दियों में अवश्य हो जाएगा।

ब्रह्मचर्य :–गांधीजी ब्रह्मचर्य की परिभाषा देते हुए कहते हैं कि ब्रह्मचर्य केवल यांत्रिक संयम नहीं है अपितु सभी इन्द्रियों पर पूर्ण संयम तथा मन, वचन और कर्म में वासना से मुक्ति ही संयम है। इस प्रकार आत्मानुभूति अथवा ब्रह्म की प्राप्ति हेतु यह राजमार्ग है।

''सत्य और ब्रह्मचर्य का पालन तथा इसी प्रकार के अन्य शाश्वत सिद्धान्त मेरे जैसे अपूर्ण मानव पर निर्भर नहीं करते। ये उन सब महापुरूषों की तपस्या की बुनियादों पर निर्भर करते है जिन्होंने उन सिद्धान्तों का पालन करने का प्रयास किया और उनकी सम्पूर्णता की अनुभूति प्राप्त की। गांधीजी ने ब्रह्मचर्य के विषय में जो कुछ भी कहा है वह गीता के दूसरे अध्याय में प्रतिपादित किया गया है।

भारतीय दर्शन में परम पुरूषार्थ मोक्ष को माना गया है। समस्त मानव जाति का, समस्त धर्मो का चरम लक्ष्य एक ही है और वह है भगवान से पुनर्मिलन अथवा इस ईश्वरीय स्वरूप की प्राप्ति जो प्रत्येक मनुष्य का प्रकृत स्वभाव है। परन्तु यद्यपि लक्ष्य एक ही है तो भी लोगों के विभिन्न स्वभावों के अनुसार उसकी प्राप्ति के साधन भिन्न–भिन्न हो सकते हैं। **''पुरूषैः अर्थ्यते इति पुरूषार्थः''** अर्थात् मनुष्य जिस फल की इच्छा करें, उसका नाम 'पुरूषार्थ' है। परम पुरूषार्थ मोक्ष को माना गया है– **''मच्यते सवैर्द्वःखबन्धनैर्यत्र सः मोक्षः''** अर्थात् जिस पद को पाकर जीव अध्यात्मिक आदि सम्पूर्ण दुःख बन्धनों से मुक्त हो जाता है उसे मोक्ष कहते है।

मोक्ष के सन्दर्भ में स्वामी जी कहते है कि मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है, जो सम्भवतः ऊपर की ओर देखता है, अन्य सभी प्राणी स्वभावतः नीचे की ओर देखते हैं। ऊपर की ओर देखना, ऊपर उठना तथा पूर्णता की खोज करना, इसे ही मोक्ष कहते है। मोक्ष व्यक्ति की आर्थिक स्थिति पर निर्भर नहीं होता। स्वामी जी जनमानस को समझाते हुये कहते है कि मोक्ष इस पर नहीं निर्भर करती है कि तुम्हारे पास कितने

Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 5, May-June, 2024
Available online : https://sijarah.com/

पैसे हैं? तुम कौन सी पोशाक पहनते हो? अथवा तुम कैसे मकान में रहते हो, बल्कि यह इस पर निर्भर है कि तुम्हारे मन में कितनी बड़ी आध्यात्मिक निधि है। यही मानव को उन्नति की ओर ले जाती है, यही भौतिक और बौद्धिक प्रगति का मूलस्रोत है, तथा यही मानव को सदैव आगे बढ़ाने वाला उत्साह और पृष्ठभूमि में रहने वाली प्रेरक शक्ति है। विवेकानन्द ने इस परम पुरूषार्थ की प्रगति के चार मार्ग बताये है, इन चारों भागों का पालन करने से व्यक्ति परम पुरूषार्थ (मोक्ष) को प्राप्त कर सकता है।

विवेकानन्द का कहना है कि यह 'योग' शरीर तथा मन से दुर्बल व्यक्तियों के लिये नहीं है, क्योंकि इसमें शारीरिक एवं मानसिक बल तथा सशक्तता की आवश्यकता पड़ती है। इस प्रकार के कठोर अनुशासन एवं अभ्यास से योगी में कुछ विलक्षण शक्तियाँ उत्पन्न होती हैं तथा वह ध्यान केन्द्रित करने की समर्थता प्राप्त कर लेता है। इसी विधि से उसे ईश्वर में लीन होने के लक्ष्य की प्राप्ति होती है।

गांधी जी मानते थे कि सत्यं शिवम् सुन्दरम् जैस शाश्वत मूल्यों की प्राप्ति शिक्षा के द्वारा ही सम्भव है। समाज की नवरचना तभी सम्भव हो सकती है जबकि शिक्षा भी उसी के अनुरूप बनाई जाए। गांधीजी की बेसिक शिक्षा समाज की आवश्यकताों के अनुरूप थी। शिक्षा प्रबुद्ध चेतनाशीलता के आधार बने तो वह उपयुक्त कही जा सकती है।

गाँधी जी के अनुसार शिक्षा का अर्थ :–'सा विद्या या विमुक्तये' शंकराचार्य द्वारा प्रतिपादित यह वाक्य इंगित करता है कि शिक्षा वह है जो मुक्ति प्रदान करे। शिक्षा का अर्थ इतना व्यापक है कि इसको शब्दों या कुछ वाक्यों की श्रेणी में बद्ध करना अत्यन्त कठिन है। मनुष्य जन्म से मृत्युपर्यन्त कुछ न कुछ प्रतिक्षण सीखता ही रहता है। अतः शिक्षा को आजीवन चलने वाली प्रक्रिया कहा गया है। गांधीजी ने साक्षरता या पढ़ने–लिखने के साधारण ज्ञान को शिक्षा नहीं माना है। उनके शब्दों में ''शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक व व्यक्ति के मन, आत्मा तथा शरीर कि सर्वागीण तथा सर्वोत्कृष्ट विकास से है।''

प्रायः यह देखा जाता है कि लोग साक्षारता या साधारण ज्ञान को ही शिक्षा मान लेते हैं किन्तु महात्मा गांधी जी इसके विरोधी थे। वे शिक्षा के द्वारा समस्त मनुष्य जाति का सर्वागीण विकास करना चाहते थे। वे बालक तथा बालिका को शारीरिक तथा मानसिक रूप से स्वस्थ बनाना चाहते थे ताकि वे अपना सभी तरह का विकास करते हुए आत्मनिर्भर बन सके। शिक्षा गाँधी जी ने शिक्षा को मनुष्य के सर्वांगीण विकास के साधन के रूप में स्वीकार किया है। वर्तमान परिदृश्य में भी विद्यालयों में बालकों के सर्वांगीण विकास के लिए उपयुक्त नवाचारों का प्रयोग किया जा रहा है।

Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 5, May-June, 2024
Available online : https://sijarah.com/

जिसमें बालकों का सर्वतोन्मुखी विकास हो रहा है। अतः गाँधी जी के शिक्षा के सम्प्रत्यय की अवधारणा आज के युग में प्रासंगिक परिलक्षित हो रही है।

गांधी जी के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य :

शिक्षा का अपना निश्चित ध्येय और आदर्श है। उसके प्राप्त करने मे यदि वह सामर्थ्य नहीं होगी तो उसका प्रभाव अच्छा होने की अपेक्षा बुरा ही होगा। रूसों के समान गांधीजी ने भी शिक्षा को बाल केन्द्रित माना है। जीवन के विभिन्न पक्षों को ध्यान में रखते हुए गांधी जी ने शिक्षा के उद्देश्य निर्धारित किए है। गांधी जी के मत से जीवन के मूल्यों एवं आदर्शो का लोक–परलोक दोनो से धनिष्ठ सम्बन्ध है। इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए गांधीजी की शिक्षा के उद्देश्यों का अध्ययन मुख्यतः निम्न रूपों में किया जा सकता है।

जीविकोपार्जन का उद्देश्य :–शिक्षा ऐसी होनी चाहिए कि वह व्यक्ति के रोटी कपड़े और मकान की समस्या को हल कर सके। गांधीजी का मत था कि शिक्षा के द्वारा व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाया जाए तथा उसकी बेरोजगारी की समस्या को दूर किया जाए। गांधीजी का विचार था कि– ''शिक्षा को बालकों की बेरोजगारी के विरूद्ध एक प्रकार की शिक्षा देनी चाहिए सात वर्ष का कोर्स समाप्त करने के पश्चात 14 वर्ष की आयु में बालक को कमाने वाले व्यक्ति के रूप में विद्यालय से बाहर भेजा जाना चाहिए। जीविकोपार्जन का उद्देश्य शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य है और गांधीजी ने इस पर अत्याधिक बल दिया। अतः उन्होंने तकली द्वारा शिक्षा दिए जाने का विशेष समर्थन किया।

सामन्जस्यपूर्ण व्यक्तित्व के विकास का उद्देश्यः–गांधी जी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य बालक के व्यक्तित्व का सामन्जस्यपूर्ण विकास करना है। इस उद्देश्य का अर्थ यह है कि बालक के व्यक्तित्व का शारीरिक, मानसिक, भावात्मक सामाजिक और आध्यात्मिक विकास इस प्रकार हो कि जो उसके व्यक्तित्व का सामन्जस्यपूर्ण विकास कर सके। अतः सभी प्रकार का विकास एक साथ होना चाहिए। गांधी जी के अनुसार सच्ची शिक्षा वही है जो बालकों की आध्यात्मिक मानसिक और शारीरिक शक्तियो को व्यक्त तथा प्रेरित करती है।

नैतिक व चारित्रिक विकास का उद्देश्य :–गांधी जी सदैव साक्षरता की अपेक्षा चरित्र निर्माण को अधिक महत्व देते थे। उन्होने इस बात को स्पष्ट करते हुए लिखा है। समस्त ज्ञान का उद्देश्य चरित्र निर्माण करना होना चाहिए। व्यक्तित्व पवित्रता को समस्त चरित्र निर्माण का आधार होना चाहिए। चरित्र के बिना शिक्षा और पवित्रता के बिना चरित्र व्यर्थ है।

Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 5, May-June, 2024
Available online : https://sijarah.com/

सांस्कृतिक उद्देश्य :–गांधी जी ने संस्कृति और शिक्षा के सांस्कृतिक उद्देश्य को बताते हुए 1947ई0 में कस्तूरबा बालिका आश्रम नई दिल्ली की बालिकाओं से कहा– मैं शिक्षा के साहित्यिक पक्ष के बजाय सांस्कृतिक पक्ष को अधिक महत्व देता हूं संस्कृति बालक–बालिकाओं के लिए मुख्य चीज है उन्हे अपने बोलने–बैठने चलने, कपड़े पहनने और छोटे से छोटे कार्य एवं व्यवहार में अपनी संस्कृति को व्यक्त करना चाहिए।

गांधी जी शिक्षा का सर्वोच्च उद्देश्य ईश्वर एवं आत्मानुभूति का ज्ञान मानते थे। इस उद्देश्य के अन्तर्गत समस्त उद्देश्य सन्निहित हो जाते हैं। गांधी जी का मत था कि मनुष्य के जीवन का लक्ष्य सत्य अर्थात ईश्वर की प्राप्ति है। मनुष्य इस सत' ईश्वर या अन्तिम वास्तविकता को पहचान सके और अपने नश्वर शरीर का सत् या ईश्वर की प्राप्ति हेतु उन्मुख कर सके। इसी में जीवन की सार्थकता है। गांधी जी इस प्रकार की भावना को उभारना ही शिक्षा का सर्वोच्च या अन्तिम उद्देश्य मानते थे। इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु गांधी जी ने नैतिक या चारित्रिक विकास को आवश्यक बतलाया है।

गाँधी जी की शिक्षा के उद्देश्य से यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षा द्वारा ही बालक को इतना परिपक्व व आत्मनिर्भर बना दिया जाए कि वह अपने सभी तरह के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल हो सके तथा एक अच्छा नागरिक बनकर समाज तथा राष्ट्र के विकास में योगदान दे सके। गाँधी जी नैतिक तथा चारित्रिक विकास पर विशेष बल देते थे और यह मानते थे कि इसके द्वारा ही बालकों में मूल्यों का विकास होगा। वर्तमान युग में भी इसकी महत्ता है क्योंकि आज का मानव बौद्धिक तथा मानसिक रूप से तथा आर्थिक रूप से भले ही कितना भी सुदृढ़ एवं सम्पन्न हो गया है लेकिन उनमें नैतिक चारित्रिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का अभाव अभी भी विद्यमान है।

स्वामी विवेकानन्द ने यह सिद्ध कर दिया है कि धर्म में साम्प्रदायिकता, संकीर्णता धर्मान्धता इत्यादि के लिये कोई स्थान नहीं है। उन्होंने अमेरिकावासियों को 'बहिनों और भाईयों' सम्बोधित कर विश्व को सहिष्णुता और सार्वभौमिकता का पाठ पढ़ाया है। वेदान्त और विज्ञान का समन्वय चाहते थे। वह जानते थे कि जब तक हिन्दू धर्म की बौद्धिक और वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत नहीं की जायेगी, तब तक वह पाश्चात्य जगत को स्वीकार नहीं होगी। इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिये स्वामी विवेकानन्द ने हिन्दू–धर्म और दर्शन पर विशेष बल दिया और अन्त तक इसी कार्य में रत रहे।

विवेकानन्द बाल्यावस्था से ही बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनके बचपन का नाम

Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 5, May-June, 2024
Available online : https://sijarah.com/

नरेन्द्र था। बचपन से ही कुश्ती, घुड़सवारी एवम् तैराकी के अतिरिक्त वह संगीत में भी निपुण थे। ज्योतिष, विज्ञान, गणित, दर्शन भारतीय तथा यूरोपियन भाषाओं पर उन्हें समान अधिकार प्राप्त था। बचपन से ही उन्होंने एकाग्र चिन्तन का अभ्यास किया। चिन्तन, आलोचन, विवेचन की इस प्रवृति के कारण ही उनका नाम विवेकानन्द पड़ा। विवेकानन्द का विचार था कि भारतवर्ष की आध्यात्मिक प्रगति तभी सम्भव है जब इसकी भौतिक कमजोरियाँ दूर हो जाये। इसके लिए उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आध्यात्मिक क्रान्ति को आवश्यक समझा एवम् उसे विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया।

स्वामी विवेकानन्द की शिक्षा की अवधारणा उनके शिक्षा दर्शन के अनुसार बिल्कुल पृथक है। वे शिक्षा का अर्थ उस पुस्तकीय ज्ञान को नहीं मानते जिसमें सूचनाएँ बलपूर्वक बालक के मस्तिष्क में ठूँसी जाती है। उन्होंने लिखा है– यदि शिक्षा का अर्थ सूचनाओं से होता है तो पुस्तकालय संसार के सर्वश्रेष्ठ सन्त होते तथा विश्वकोष ऋषि बन जाते। उन्होंने शिक्षा का अवधारण इस प्रकार दी है *''शिक्षा मानव में पहले से विद्यमान पूर्णता को प्रकाश में लाना है।''* मानव के भीतर यदि ज्ञान तथा शक्ति का अनन्त स्रोत विद्यमान नहीं होता, तो हजारों प्रकार के प्रयास करके भी वह कभी ज्ञानी तथा शक्तिमान नहीं हो पाता। बाहरी पदार्थ तथा बाहरी उपाय उसके अन्दर में किसी भी प्रकार ज्ञान तथा शक्ति का प्रवेश नहीं करा सकते बल्कि उस ज्ञान तथा शक्ति की अभिव्यक्ति में जो बाधाएँ है केवल उन्हीं को दूर करने में सहायता भर कर सकते है उन बाधाओ के दूर होने के साथ ही साथ उनके भीतर का अनन्त ज्ञान तथा असीम शक्ति हजारों ओर से प्रवाहित होकर उसे क्रमशः सर्वज्ञ तथा जगत सृष्टि कृर्तव्य के अतिरिक्त अन्य सभी प्रकार की शक्तियों से भूषित कर डालती है। अतः उन बाधाओं को दूर करने विशिष्ट उपायो को ही शिक्षा कहा जाना चाहिये।

स्वामी जी शिक्षा को जीवन की सर्वाधिक अनिवार्य आवश्यकता मानते थे। उनके अनुसार, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड ईश्वर द्वारा निर्मित है। वह आत्मा को परमात्मा का अंश मानते थे। उनका मत था कि प्रत्येक प्राणी में ईश्वर का अंश आत्मा है। वह ईश्वर व प्रत्यक्ष जगत दोनों को वास्तविक मानते थे, अतः जीवन के उद्देश्यों में उन्होंने प्रत्यक्ष जगत व परलोक दोनों को स्थान दिया। शिक्षा को जीवन का लक्ष्य की प्राप्ति का प्रमुख साधन मानते हुए उन्होंने शिक्षा की व्याख्या एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया के रूप में की, जिसके द्वारा मनुष्य भौतिक प्रगति करता है और आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त करता है। भौतिक दृष्टि से शिक्षा के सम्बन्ध में उन्होंने कहा– वास्तविक शिक्षा वह है जो उपयोगी वस्तुओं की वास्तविक प्रकृति को जानने और उनके उपयोग करने उनसे वास्तविक जीवन की रक्षा करने में सहायता करती है। उन्होंने शिक्षा को आध्यात्मिक

Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 5, May-June, 2024
Available online : https://sijarah.com/

एकात्म भाव की अनुभूति का साधन मानते हुए कहा–*''सर्वोच्च शिक्षा वही है जो सम्पूर्ण सृष्टि से हमारे जीवन का सामंजस्य स्थापित करती है।''*

यहाँ सम्पूर्ण सृष्टि से उनका तात्पर्य संसार के जड़–चेतन, सजीव–निर्जीव व चर–अचर सभी प्रकार की वस्तुओं से है। सामंजस्य स्थापित करने से उनका तात्पर्य मनुष्य की समस्त शक्तियों को पूर्णरूप से विकसित करके उन्हें उच्चतम बिंदु पर पहुँचाने से है। विवेकानन्द के अनुसार, शिक्षा का तात्पर्य पूर्ण मनुष्यत्व के विकास की प्रक्रिया से है। शिक्षा को मनुष्य जीवन की अनिवार्य आवश्यकता मानते थे। इनकी दृष्टि से शिक्षा वह सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य भौतिक प्रगति करता है और आध्यात्मिक पूर्णता की प्राप्ति करता है। भौतिक दृष्टि से शिक्षा को इस प्रकार परिभाषित किया है–*''वास्तविक शिक्षा वह है जो उपयोगी वस्तुओं की वास्तविक प्रकृति को जानने और उनके उपयोग करने और उनसे वास्तविक जीवन की रक्षा करने में सहायता करती है।''* पर साथ ही विवेकानन्द सृष्टि के कण–कण में ईश्वर को व्याप्त मानते थे और यह मानते थे कि जीवन का अन्तिम उद्देश्य इस आध्यात्मिक एकात्म भाव की अनुभूति करना है। इनकी दृष्टि से यह शिक्षा का सर्वोच्च उद्देश्य या कार्य है। इनके अपने शब्दों में *''सर्वोच्च शिक्षा वह है जो हमारे जीवन और समस्त सृष्टि के बीच समरसता स्थापित करती है।''*

बी0आर0 देव (2015), ''महात्मा गांधी के शैक्षिक दर्शन में आध्यात्मिक तत्व''। इनके अध्ययन का उद्देश्य था गांधी जी के सभी राज्यों में आध्यात्मिकता की खोज करना और यह महसूस किया कि गांधी जी के जीवन दर्शन और शिक्षा दोनों ही आध्यात्मिकता से परिपूर्ण थी। शशिप्रभा (2017), ''महात्मा गाँधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर, अरविन्द घोष एव विवेकानन्द के शैक्षिक विचारो का अध्ययन''। उन्होंने निष्कर्ष निकाला है कि बालक की शिक्षा किसी भी परिवेश में होनी चाहिए तथा स्त्री शिक्षा, धार्मिक शिक्षा आदि पर भी जोर दिया। चरित्र की शिक्षा पर गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने बहुत अधिक बल दिया तथा अनुशासन के बारे में उन्होंने कहा कि बच्चे का अनुशासन स्वतन्त्र होना चाहिए न कि दण्डात्मक। हरीश चन्द्र अवस्थी (2019), ''गांधी जी के बुनियादी शिक्षा दर्शन एवं प्रयोजनवादी शिक्षा दर्शन के अध्ययन''। अपने अध्ययन के निष्कर्ष स्वरूप शोधार्थी द्वारा पाया गया कि गांधी जी की बुनियादी शिक्षा में उनके आध्यात्मिक, कर्मयोग व उपयोगितावाद का समिश्रण है जबकि प्रयोजनवाद समस्याओं व व्यवस्थाओं के प्रति भौतिकवादी, प्रयोगवादी दृष्टिकोण पर बल देता है। बुनियादी शिक्षा दर्शन प्रयोजनवाद से नैतिक चारित्रिक, आध्यात्मिक मूल्यों के विषय पर भिन्न दृष्टिकोण रखता है जबकि शिक्षण पद्धति उपयोगितावादी शिक्षा, अनुशासन एवं विद्यार्थी जैसे महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर समान दृष्टिकोण रखते हैं। शर्मा, शबनम

Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 5, May-June, 2024
Available online : https://sijarah.com/

(2019) द्वारा चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ से शिक्षाशास्त्र विषय में पी.एच.डी. उपाधि हेतु ''स्वामी दयानन्द और विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों को आधुनिक भारतीय शिक्षा के सन्दर्भ में एक समीक्षात्मक अध्ययन'' नामक शीर्षक पर शोध प्रस्तुत किया गया था। स्वामी विवेकानन्द एवं स्वामी दयानन्द के शैक्षिक विचार उस समय प्रस्तुत किये गये थे जब देश परतंत्र था परन्तु शिक्षा सम्बन्धी विचार आज भी उतने ही समीचीन है स्वामी दयानन्द एवं स्वामी विवेकानन्द की दृष्टि से समाज के नवनिर्माण का कार्य आध्यात्मिक मूल्यों के द्वारा ही संभव है। आध्यात्मिक मूल्यों का लक्ष्य है–'स्व' की प्राप्ति अर्थात आत्मसाक्षात्कार। यह आत्म साक्षात्कार मोटे रूप में मुक्ति है जो मानव का लक्ष्य है और इस लक्ष्य की प्राप्ति में शिक्षा का प्रमुख योगदान है, जिसके अभाव में हमारी सम्पूर्ण व्यावसायिक वैज्ञानिक एवं औद्योगिक उपलब्धियाँ अर्थहीन रहेगी। स्वामी दयानन्द ने अपने शैक्षिक विचार 'सत्यार्थ प्रकाश' में व्यक्त किए है और स्वामी विवेकानन्द ने अपने शैक्षिक विचार विभिन्न व्याख्यानों, क्रियाकलापों तथा रचनाओं के माध्यम से प्रस्तुत किये है।

शोध विधि–

शिक्षा जैसे संश्लिष्ट विषय में शोध के वर्गीकरण की कोई सर्वमान्य विधि नहीं है। हिलवे ने जहाँ ऐतिहासिक शोध, सर्वेक्षण शोध, प्रायोगात्मक शोध तथा व्यक्ति अध्ययन नामक चार शोध बताये हैं अन्य विद्वानों ने भी शैक्षिक शोध को अलग–अलग वर्गों में विभाजित किया है परन्तु ये समस्त विभाजन शोध विधि के आधार पर किये गये थे। भारत में 'राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद' ने अपने सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन (चतुर्थ) में शोध का वर्गीकरण शोध विधि के आधार पर किया तथा इन वर्गीकरण में प्रस्तुत शोध ऐतिहासिक अध्ययन की कोटि में आता है। क्योंकि इसमें अतीत महापुरूष महात्मा गाँधी एवं विवेकानन्द के दार्शनिक एवं शैक्षिक विचार शिक्षा दर्शन का अध्ययन वर्तमान परिस्थिति के परिप्रेक्ष्य में किया गया है।

ऐतिहासिक अनुसंधान के माध्यम से अतीत की शिक्षा सम्बन्धी दार्शनिक विचारधाराओं, आवश्यकताओं एवं आदर्शों की जानकारी उपलब्ध होती है और उनके सन्दर्भ में वर्तमान समय में शिक्षा जगत की समस्याओं एवं व्यवस्थाओं का ज्ञान मिलता है। ऐतिहासिक अनुसंधानकर्ता अतीत की पृष्ठभूमि में वर्तमान पर विचार करता है। प्रस्तुत अध्ययन की प्रविधि ऐतिहासिक अनुसंधान के अन्तर्गत दार्शनिक विवेचन पर आधारित है।

निष्कर्ष

Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 5, May-June, 2024
Available online : https://sijarah.com/

आज का वह युवा वर्ग जो पश्चिमी सभ्यता के वशीभूत नरों के शिकार होते जा रहे, उन्हें गाँधी जी के जीवन से सीख लेनी चाहिए जो इस प्रकार के वातावरण में रहकर भी उसी प्रकार मद्यपान से दूर रहे जिस प्रकार चन्दन में रहकर भी विषधर लिपटे रहने पर भी वे चन्दन को विषैला बनाना में असफल रहते हैं। आज युवा वर्ग में व्यापत अशान्ति, निष्क्रियता और अनुशासनहीनता की भावना का सर्वप्रथम कारण यह है कि गाँधी जी की बेसिक शिक्षा ने जिस मूल स्थिति को प्रस्तुत किया है उसको समझने का प्रयास शायद अभी नहीं किया गया है। यद्यपि आज शिक्षा का प्रसार बढ़ गया है यह शिक्षा निष्क्रिय बौद्धिक विलास को प्रदान करने के अतिरिक्त विद्यार्थियों को कुछ नहीं देती। अनुशासनहीनता के बदलते हुए कारणों की जब खोज की जाती है तो सहज भाव से यही कहा जाता है कि शिक्षा परालम्बन से मुक्ति प्रदान करने में असमर्थ है। इसलिए निराश की पृष्ठभूमि में बालक अनुशासनहीनता तथा गुरूओं और राष्ट्र के प्रति असम्मान की भावना के अतिरिक्त अपने पास और रख ही क्या सकता है। वस्तुतः आधुनिक शिक्षा में वह शक्ति नहीं है जो व्यक्ति को सम्पूर्ण विकसित कर सके। आज बच्चों को प्रारम्भ से ही कम्प्यूटर व नैतिक शिक्षा का पुस्तकीय ज्ञान दिया जाता है और आधुनिकता का दावा किया जाता है परन्तु यह व्यवहारिक ज्ञान के सर्वथा अनुकूल नहीं है।

आज भारत में जितनी समस्यायें हैं चाहे वे आर्थिक हो, सामाजिक या राजनैतिक उन सभी के मूल में एक प्रमुख कारण है– समुचित शिक्षा का अभाव। इन सभी समस्याओं का समाधान गाँधी जी द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों एवं उनके शैक्षिक विचारों द्वारा ही सम्भव है। नैतिक मूल्यों का ह्रास जैसा आज हुआ है वैसा पहले कभी नहीं हुआ जिसके फलस्वरूप जीवन मूल्य ही अलक्षित होते जा रहे हैं। उनका पुनरूत्थान सच्ची बुनियादी शिक्षा ही किया जा सकता है।

स्वामी विवेकानन्द की शिक्षा की अवधारणा उनके शिक्षा दर्शन के अनुसार बिल्कुल पृथक है। वे शिक्षा का अर्थ उस पुस्तकीय ज्ञान को नहीं मानते जिसमें सूचनाएँ बलपूर्वक बालक के मस्तिष्क में ठूँसी जाती है। उन्होंने लिखा है– यदि शिक्षा का अर्थ सूचनाओं से होता है तो पुस्तकालय संसार के सर्वश्रेष्ठ सन्त होते तथा विश्वकोष ऋषि बन जाते। उन्होंने शिक्षा का अवधारण इस प्रकार दी है ''शिक्षा मानव में पहले से विद्यमान पूर्णता को प्रकाश में लाना है।'' मानव के भीतर यदि ज्ञान तथा शक्ति का अनन्त स्त्रोत विद्यमान नहीं होता, तो हजारों प्रकार के प्रयास करके भी वह कभी ज्ञानी तथा शक्तिमान नहीं हो पाता। भारतीय संस्कृति का मूल आधार संस्कृत–शिक्षा का प्रसार और आम जनता की समुचित व्यवस्था के विषय में भी उनके सुविचारित निर्देश विशेष माननीय है। इसके अतिरिक्त वास्तविक शिक्षा के वाहक दृढिष्ठ, बलिष्ठ,

Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 5, May-June, 2024
Available online : https://sijarah.com/

मेधावी तथा सेवादर्श से अनुप्राणित चरित्रवान शिक्षक तैयार करने को महत्वपूर्ण दायित्व भी अपने देशवासियों पर डाल गये है।

विवेकानन्द मूलतः अद्वैत वेदान्त से प्रभावित थे किन्तु उनके दर्शन को नव्य वेदान्त दर्शन कहा जाता है। अब प्रश्न उठता है कि इसे नव्य वेदान्त क्यों कहा जाता है। तथा इनमें नया क्या है? नव्य वेदान्त को नया कहे जाने का मुख्य कारण निम्नलिखित है। समकालीन भारतीय दार्शनिकों के विचारों में स्थान–स्थान पर पाश्चात्य अस्तित्ववाद, भाववाद, अनुभववाद, फलवाद, यथार्थवाद तथा हेगलीय प्रत्ययवाद का प्रभाव देखा जा सकता है।

सन्दर्भ

- गाँधी, एम.के., (1951). *बेसिक एजूकेशन.* अहमदाबाद. नव जीवन पब्लिकेशन हाउस.
- गाँधी, एम.के., (1965). *टू द स्टूडेन्ट्स. वाराणसी.* सर्व सेवा संघ.
- चौधरी एवं उपाध्याय (1969). *भारतीय शिक्षा की सामयिक समस्याएँ.* विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
- जौहरी एवं पाठक (1969). *भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ.* विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
- रावत, पी.एल. (1970). *भारतीय शिक्षा का इतिहास.* राम प्रसाद एण्ड सन्स, आगर.
- प्रभु, के.आर. (1994). *महात्मा गांधी के विचार.* नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया.
- राव, यू. आर. (1994). *महात्मा गांधी के विचार.* नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया.
- त्यागी, जी.डी. (1999). *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि.* विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
- पाण्डेय, आर.एस. (2000). *भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्याएं.* अग्रवाल प्रकाशन, आगरा.
- भटनागर, एस. (2003). *शिक्षा मनोविज्ञान.* सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ.
- सर्वे (2005). *सर्वे ऑफ स्टडी स्टेटस ऑफ प्राइमरी एजूकेशन.*
- सिंह, एम.एम. (2005). *मनमोहन रिपोर्ट कार्ड ऑन बुनियादी एजूकेशन.*
- पाठक, पी.डी. (2005). *भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं.* विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा पृष्ठ–732.
- नैर, वी. एच. (2016) ''स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचार'', केरल विश्वविद्यालय, केरल से शिक्षाशास्त्र में पी.एच.डी. हेतु

Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 5, May-June, 2024
Available online : https://sijarah.com/

- पुथियल, जे. डी. (2017) *''स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक दर्शन''* बम्बई विश्वविद्यालय बम्बई से शिक्षाशास्त्र विषय में पी. एच. डी. हेतु
- भारवा, एस. एम. (2017) *''स्वामी विवेकानन्द एवं लोकमान्य तिलक के शैक्षिक दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन''*, सागर विश्वविद्यालय सागर से शिक्षाशास्त्र विषय में पी.एच.डी. उपाधि हेतु।
- गुप्ता, आर. पी. (2018) *''स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक दर्शन का अध्ययन''*, रूहेलखण्ड़ विश्वविद्यालय बरेली से शिक्षाशास्त्र विषय में पी.एच.डी. उपाधि हेतु।
- मिश्रा, शिवसरन (2018) *''स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक दर्शन और शिक्षण विधि का आलोचनात्मक अध्ययन''*, अवध विश्वविद्यालय, अवध से शिक्षाशास्त्र विषय में पी.एच.डी. उपाधि हेतु।
- अभ्यंकर, एस. वी. (2019) *''स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों एवं दार्शनिक आधारों पर परमाणु अतंरिक्ष युग तथा विश्वव्यापी मूल्य संकट के युग में मूल्य–शिक्षा के विशेष सन्दर्भ में तथा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारत में मूल्य शिक्षा की आवश्यकता का विस्तृत, गहन एवं आलोचनात्मक विश्लेषण''*, पूना विष्वविद्यालय, पूना से शिक्षाशास्त्र विषय में पी.एच.डी. उपाधि हेतु।
- शर्मा, शबनम (2019) *''स्वामी दयानन्द और विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों को आधुनिक भारतीय शिक्षा के सन्दर्भ में एक समीक्षात्मक अध्ययन''*, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ से शिक्षाशास्त्र विषय में पी.एच.डी. उपाधि।
- कनकड़, प्रभा (2020) *''स्वामी विवेकानन्द एवं डॉ. एनी बेसेन्ट के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन''*, शिक्षाशास्त्र विषय में पी.एच.डी।